

साप्ताहिक  
Live not just breaTHE

MPHIN/2015/63220  
MP/IDC1528/16-18

Global  
School Of  
Excellence,  
Obedullaganj

# दि कामिक पोर्ट

वर्ष : 7, अंक : 50

(प्रति बुधवार, इन्डॉर, 3 अगस्त 2022 से 9 अगस्त 2022)

पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

## विशाखापत्नम गैस रिसाव मामले में एनजीटी ने दिए जांच के आदेश...

नई दिल्ली। पोरस लैबोरेटरीज प्राइवेट लिमिटेड की एक यूनिट से 03 जून 2022 को हुए गैस रिसाव की जांच के लिए नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने छह सदस्यीय समिति को घटना की जांच के निर्देश दिए हैं। मामला आंध्र प्रदेश के विशाखापत्नम का है। कोर्ट ने समिति को घटना के कारणों की जांच के साथ-साथ भविष्य में इस तरह की घटना दोबारा न हो उसके लिए भी उपाय दृ়ঢ়নे के लिए कहा है।

03 अगस्त 2022 को दिए आदेश में कोर्ट ने कहा है कि समिति ऐसे संभावित क्षेत्रों और उद्यागों को चिन्हित करे जहाँ इस तरह की घटनाएँ हो सकती हैं। इससे घटना की जवाबदेही तय करने के साथ-साथ दुर्घटना के मामले में प्रदूषकों का पता लगाया जा सकता है। इतना ही नहीं इसकी मदद से भविष्य में इस तरह की घटनाओं से निपटने के उपाय किये जा सकते हैं। एनजीटी ने समिति को अगले तीन महीनों के भीतर रिपोर्ट सभापित करने का निर्देश दिया है। गौरतलब है कि इस मामले में कोर्ट ने एक रिपोर्ट पर स्वतं-संज्ञान लेकर कार्रवाही कर्मन एफ्टुएंट ट्रीटमेंट प्लाट (सीईटीपी) शुरू की है। इस रिपोर्ट के मुताबिक पोरस में 9 एमएलडी टेररी एफ्टुएंट और 27 लॉबोरेटरीज प्राइवेट लिमिटेड, विशाखापत्नम से हुए गैस रिसाव से 178 महिला श्रमिकों के स्वास्थ्य को असर पहुंचा है। इस मामले में एनजीओ %साईटर्स-

फॉर पीपल% की ओर से अदालत में दाखिल रिपोर्ट में कहा गया है कि सीईटीपी इंटिमेट अपैल फैक्ट्री और पोरस लैब जिनसे गैस रिसाव हुआ है वो आंध्रप्रदेश इंडिस्ट्रियल इंफ्रास्ट्रक्चर कॉरपोरेशन (एपीआईआरसी) के स्पेशल इकोनॉमिक जोन में हैं। उद्योग से हुए अमोनिया के रिसाव में 369 महिला श्रमिक चोपट में आ गई थी। इस मामले में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) का कहना था कि यह गैस रिसाव पोरस लैब प्राइवेट लिमिटेड से न होकर मेसर्स ब्रैंडिंग्स अपैरल इंडिया लिमिटेड से हुआ था। उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (यूपीपीसीबी) ने अपनी रिपोर्ट में खुलासा किया है कि चमड़ा उद्योग के केंद्र जाजमऊ, कानपुर में कोई सीवेज नेटवर्क नहीं है। साथ ही रिपोर्ट का कहना है कि जाजमऊ क्षेत्र में पैदा होने वाला बिना साफ किया थे धरेलू सीवेज भी औद्योगिक प्रवाह के साथ मिश्रित हो रहा है। इस क्षेत्र के साथ-साथ सीईटीपी में जानकारी मिली है कि इस कन्वेशन चैनल के माध्यम से सीईटीपी में है। गौरतलब है कि जाजमऊ के एक रिपोर्ट पर स्वतं-संज्ञान लेकर कार्रवाही कर्मन एफ्टुएंट ट्रीटमेंट प्लाट (सीईटीपी) शुरू की है। इस रिपोर्ट के मुताबिक पोरस में 9 एमएलडी टेररी एफ्टुएंट और 27 लॉबोरेटरीज प्राइवेट लिमिटेड, विशाखापत्नम से हुए गैस रिसाव से 178 महिला श्रमिकों के स्वास्थ्य को असर पहुंचा है। इस मामले में एनजीओ %साईटर्स-



अपशिष्ट का निर्वहन करती हैं, जिसे आगे 4 पांच एसेंसीजों की मदद से 36 मिलियन लीटर प्रति दिन (एमएलडी) की क्षमता वाले सीईटीपी प्लाट में भेज दिया जाता है। इस प्लाट को 9 एमएलडी टेररी एफ्लुएंट और 27 एमएलडी धरेलू सीवेज से मिश्रित अपशिष्ट के उपचार के लिए डिजाईन किया गया है।

इस क्षेत्र में राष्ट्रीय मण्डी वासियों को 15 जनवरी, 2020 से उत्तर प्रदेश जल निगम द्वारा जलापूर्ति की जा रही है। वहाँ कुल 225 धरेलू कनेक्शन दिए गए हैं। इसी तरह 15 जुलाई, 2020 से ग्राम खानचंपुर, रानिया के निवासियों को साफ पानी की आपूर्ति की जा रही है। यह रिपोर्ट कानपुर के जाजमऊ में चमड़ा उद्योग द्वारा होते जल प्रदूषण और रानिया, कानपुर देहात और राष्ट्रीय मण्डी में क्रांतियम डंप के चलते होते जल प्रदूषण के मामले में उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (यूपीपीसीबी) द्वारा सर्वानुमित की गई है।

## मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बरगद, नीम और मौलश्री के पौधे लगाए

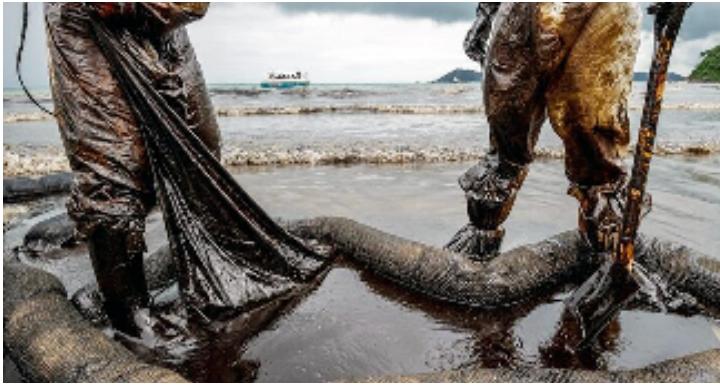


भोपाल मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने एन.सी.सी. कैडेट्स और पर्वतारोही श्रीमती ज्योति रावे के साथ श्यामला हिल्स स्थित स्मार्ट सिटी उद्यान में नीम, बरगद और मौलश्री के पौधे लगाए। मुख्यमंत्री श्री चौहान के साथ आईईसी विश्वविद्यालय भोपाल के एनसीसी कैडेट सर्वंगी अधिषंक कुमार सिंह, जितेंद्र प्रकाश श्रीवास्तव, नितेश कुशवाहा, गौरव यादव तथा कुमारी शिलपिल कुशवाहा ने पौधे-रोपण किया। विश्वविद्यालय की डीन स्ट्रॉट वेलफेयर डॉ. रेनू यादव और प्रो. सोनू लाल उपस्थित थे। एनसीसी कैडेट्स द्वारा पौधे-रोपण, स्वच्छता के साथ विभिन्न समुदायिक विकास गतिविधियां संचालित की जाती हैं। पर्वतारोही श्रीमती ज्योति रावे के साथ श्री मुमताज खान ने भी पौधे-रोपण किया। श्रीमती रावे यरोप महाद्वीप की सबसे ऊँची चोटी माउंट एलब्रुस पर चढ़ने वाली देश की सर्वाधिक आयु वाली महिला है। उन्होंने अफ्रीका महाद्वीप की सबसे ऊँची चोटी माउंट किलिमंजारो पर भी तिरणा फहराया है बरगद का धार्मिक और औषधीय महत्व है। आयुर्वेद के अनुसार बरगद की पत्तियाँ, छाल आदि से कई औषधियों का इलाज संभव है। इसका काढ़ा बनाकर पीने से इम्युनिटी बढ़ती है। एंटीबायोटिक तत्वों से भरपूर नीम को सर्वोच्च औषधि के रूप में जाना जाता है। मौलश्री औषधीय वृक्ष है, इसका सदियों से आयुर्वेद में उपयोग होता आ रहा है।

## 90 फीसदी से ज्यादा 'आयल स्लीक्स' के लिए जिम्मेवार है इंसान

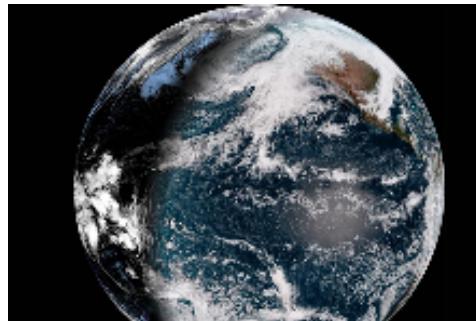
अमेरिका अमेरिका और चीनी वैज्ञानिकों की एक टीम ने जानकारी दी है कि समुद्रों में 90 फीसदी से ज्यादा 'आयल स्लीक्स' के लिए हम इंसान ही जिम्मेवार हैं। जो समुद्री इक्सीस्टम और वहां रहने वाले जीवों के लिए बड़ा खतरा है यह फैला हुआ तेल देखा जाए तो समुद्र में फैले तेल की छोटी से छोटी मात्रा भी घैलैकटनों पर बड़ा प्रभाव डाल सकती है। यह अति-सूखे में जीव वहां समुद्री वाद्य प्रणाली का आश्राम है, जिनपर मछलियों से लेकर कई जीवों की जीवन निर्भार करता है। वहां गहराई में रहने वाले अन्य समुद्री जीव जैसे क्रेल और समुद्री कछुए जब सांस लेने के लिए सतह पर आते हैं तो वो इस आयल

आयल स्लीक्स के यह आंकड़े पिछले अनुमानों से कहीं ज्यादा हैं। इससे पहले वैज्ञानिकों का मानना था कि वैश्विक स्तर पर करीब 50 फीसदी आयल



स्लीक्स के लिए इंसान जिम्मेवार हैं, जबकि बाकी प्राकृतिक स्रोतों से वातावरण में फैल रहा है। देखा जाए तो आयल स्लीक्स समुद्र की सतह पर फैली तेल की बहुत महीन परत होती है। जो बड़े पैमाने पर होते तेल रिसाव के कारण समुद्री सतह पर फैल जाती है। इसके अलावा तेल की यह परत अन्य इंसानी कारणों और प्राकृतिक स्रोतों से भी लगातार पैदा होती रहती है। इसके बारे में फ्लोरिडा स्टेट यूनिवर्सिटी के डिपार्मेंट ऑफ अर्थ, औशियन एंड एटोमोस्फेरिक साइंस के प्रोफेसर और शोध से जुड़े वैज्ञानिक इथान मैकडोनाल्ड का कहना है कि इन निष्कर्षों के बारे में जो बात सबसे याद हैरान करने वाली है वो यह है कि जितनी बार भी हमने समुद्र में फैले इस तेल का पता लगाया इसकी वजह हजारों और पाइपलाइनों के साथ समुद्र तल में प्राकृतिक स्रोतों से होता रिसाव था। इसके साथ ही उड़ाणों और आबादी की वजह से समुद्रों में छोड़ा जा रहा सींवेज भी कहीं न कहीं इन अत्यायल स्लीक्स की वजह है। जिन्हें साइंस में प्रकाशित इस शोध के मुताबिक थोड़े समय के लिए रहने वाले तेल के यह चक्रते हवा और धाराओं की वजह से लगातार इधर उधर होते रहते हैं। वहीं लहरें उड़ें लगातार तोड़ती रहती हैं जिससे इनकी जांच में कठिनाई होती है। अपने इस विश्लेषण के लिए वैज्ञानिकों ने 2014 से 2019 के बीच उपग्रही रडारों से प्राप्त 560,000 से ज्यादा छवियों की जांच की है। पुराने तेल प्रदूषित स्थानों, सीमा और संभावित स्रोतों

स्लीक्स का शिकार बन जाते हैं। शोध में जो निष्कर्ष समाप्त हैं उनसे पता चला है कि यादातर आयल स्लीक्स तटों के पास पाए गए हैं। इनमें से करीब आधे तटों के लगभग 25 मील के दायरे में थे, जबकि 90 फीसदी का दायरा 100 मील से यादा नहीं था। इन्हाँ नहीं अत्यल स्लीक्स की 2 फीसदी से भी कम घटनाएँ खेले समुद्र में मौजूद तेल उत्पादक क्षेत्रों के आसपास पाई गई थी, लेकिन आयल स्लीक्स के उच्च घनत्व वाले 21 अलग-अलग क्षेत्र शिरिंग मार्गों के साथ-साथ मेल खाते हैं। इस बारे में शोध और यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ फ्लोरिडा से जुड़े वैज्ञानिक न्यूआमिन हूँ का कहना है कि <sup>सैटेलाइट</sup> से ली तटवर्षी समुद्र में तेल प्रदूषण की निगरानी के लिए एक कुशल और बेतर तरीका प्रदान करती है, खासकर उन क्षेत्रों में जहां इंसानों की पृथक मुश्किल है। वैज्ञानिकों को दुनिया के अन्य क्षेत्रों की तुलना में मैक्सिको की खाड़ी में तेल प्लेटफॉर्मों के पास अपेक्षाकृत कम 'आयल स्लीक्स' मिले हैं जो दर्शाता है कि यह अमेरिका द्वारा आयल प्लेटफॉर्म ऑपरेटरों के लिए बनाए कड़े नियमों और उनके पालन का ही नतीजा है, वहां तेल के रिसाव के कम मापदंस समाप्त आए हैं। ऐसे में मैक्डोनाल्ड कहना है कि हम इससे सीख ले सकते हैं और इसी तरह नियमों को उन जगहों पर लागू कर सकते हैं जहां इस तरह की घटनाएँ यादा दर्ज की गई हैं। इससे स्थिति में व्यापक



**पृथ्वी सामान्य से अधिक तेजी से धूम रही है, लेकिन क्यों? इसका हम पर क्या होगा असर**

इंटर्लैंड के नेशनल फिजिकल लेबोरेटरी के वैज्ञानिकों ने 29 जून को अब तक का सबसे छोटा दिन और 26 जुलाई को एक और छोटा दिन रिकॉर्ड किया है। इन दोनों दिनों में, पृथ्वी ने 24 घण्टे से भी कम समय में अना सामान्य 24 घण्टे का चक्रर पूरा किया। जबकि 29 जून सामान्य से 1.59 मिलीसेकंड छोटा रहा, यह 1960 के दशक के बाद से सबसे छोटा दिन रहा, जब से वैज्ञानिकों ने समय मापने के लिए परमणु घड़ियों का उपयोग करना शुरू किया था। 26 जुलाई को सामान्य से 1.59 मिलीसेकंड कम जो कि एक नए रिकॉर्ड के करीब पहुंच गया।

इंटरेस्टिंग इंजीनियरिंग के मुताबिक छोटे दिन पृथ्वी के सामान्य से अधिक तेजी से धूमने के कारण होते हैं। लेकिन पृथ्वी तेजी से क्यों धूम रही है? वैज्ञानिक इसके बारे में पूरी तरह से निश्चित नहीं हैं, लेकिन वैज्ञानिकों ने इसके निम्नलिखित कारण होने की बात कही है- जियोफिजिकल स्पिर्चर रिस्प्लिंग लेटर्स में प्रकाशित एक अध्ययन से पता चलता है कि ग्लोबल वार्मिंग के कारण ग्लोशियरों का पिघलना शुरू हुआ, जिसके कारण हप्ते ग्लूर्न की धूरी 1990 के दशक से तेजी से आगे बढ़ रही है और पृथ्वी तेजी से धूम रही है। जलवायु या जलवायु ग्लोशियरों में परिवर्तन, जैसे ग्लोशियरों का पिघलना और जमना, जिनका वजन पृथ्वी पर पड़ता है। भूकंप और अन्य भूकंपीय गतिविधियां जो द्रव्यमान को पृथ्वी के केंद्र की ओर ले जाती हैं, जैसे कि एक कटाई करने वाला अक्षिक अपनी बांहों को खींचता है। पृथ्वी के भीतर पिघले हुए कोर की गतिविधि जो ग्रह पर द्रव्यमान को स्थानांतरित करता है। महासागरीय प्रसार और समुद्र तल पर दबाव जो पृथ्वी की धूरी को खींचता है। एक रिपोर्ट के मुताबिक -चैंडलर वॉल- - ग्रह के पूरी तरह से गोलाकार नहीं होने के कारण पृथ्वी की धूरी का प्राकृतिक विस्थाप, जो धूमने की गति से जुड़ा हो सकता है।

ऑस्ट्रेलियाई खगोलशास्त्री फेड वॉट्सन ने बताया कि जब आप सबसे महावृप्ति पहलू को देखना शुरू करते हैं, तो आप महसूस करते हैं कि पृथ्वी के बीच ग्लूर्न वैज्ञानिकों को लगता है और इसे एक एसा वातावरण मिला है जिससे ये सभी चीजें थोड़ी धीमी हो गई हैं। इंटरेस्टिंग इंजीनियरिंग के मुताबिक कुछ वैज्ञानिकों को लगता है कि यह छोटे दिनों की एक नई अवधि की शुरूआत हो सकती है। एक रिपोर्ट के अनुसार, यदि पृथ्वी तेजी से धूमती होती है, तो इसपे रोटिव लीप सेकंड्स या नकारात्मक छलांग सेकंड की शुरूआत हो सकती है। इन नकारात्मक छलांग सेकंडों को शुरू करने का उद्देश्य उस दर को बनाए रखना होगा जिस पर धूम आयी होती है। यह संभावित रूप से घड़ी पर निर्भार आईटी सिस्टम और सॉफ्टवेयर और जीपीएस उपग्रहों के लिए एक घातक प्रभाव पैदा कर सकता है।

## एयर क्लाइटी ट्रैकर-बवसर-मुंगेर सहित तीन शहरों में दूषित रही हवा, शिलांग से 15 गुना यादा रहा प्रदूषण

मुंबई केंद्रीय प्रदूषण बोर्ड द्वारा 05 अगस्त 2022 को जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि देश के 153 शहरों में से 50 में हवा बेहतर रही, जबकि 86 शहरों की श्रेणी संतोषजनक, 14 में मध्यम और 3 शहरों में खराब रही। यदि दिल्ली-एनसीआर की बात करें तो यहां की वायु गुणवत्ता संतोषजनक श्रेणी में है। दिल्ली के अलावा फरीदाबाद में एयर क्लाइटी इंडेक्स 87, गाजियाबाद में 62, गुरुग्राम में 69, नोएडा में 94 पर पहुंच गया है देश के अन्य प्रमुख शहरों से जुड़े आंकड़ों को देखें तो मुंबई में वायु गुणवत्ता सूचकांक 71 दर्ज किया गया, जो प्रदूषण के संतोषजनक स्तर को दर्शाता है। जबकि कोलकाता में यह इंडेक्स 36, चेन्नई में 57, बैंगलोर में 52, जयपुर में 56 और पटना में 119 दर्ज किया गया।

इन्डैट, 3 अगस्त से 9 अगस्त 2022

## दि कार्मिक पोस्ट

3

# घर तिरंगा अभियान में उत्साह और उल्लास के साथ भाग लें पंचायत प्रतिनिधि - मुख्यमंत्री श्री चौहान

**भोपाल मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान** ने नवनिर्वाचित पंचायत प्रतिनिधियों को बधाई देते हुए अपने दायित्व का निर्वहन जन-अपेक्षाओं के अनुरूप करने के लिए उन्हें शुभकामनाएँ दी। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि नवनिर्वाचित पंचायत प्रतिनिधि अपने क्षेत्र के विकास और लोगों के कल्याण में कोई कसर नहीं छोड़ें, राज्य सरकार पंचायत प्रतिनिधियों के साथ है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने नवनिर्वाचित पंचायत प्रतिनिधियों को आजादी के अभूत महात्मत्व में उत्साहपूर्वक सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश आजादी का अभूत महात्मत्व मना रहा है। देश ने संघर्ष, त्याग, तपस्या और बलिदान से आजादी पायी है। इस काल को उत्सव के रूप में मनाना प्रत्येक प्रदेशवासी का कर्तव्य है। हम सब +हर घर तिरंगा+ अभियान से जुड़ कर आनंद और उत्साह से आजादी का पर्व मनाएं।

मुख्यमंत्री श्री चौहान पंचायती राज संस्थाओं के नवनिर्वाचित प्रतिनिधियों को बीडियो कान्फेसिंग से निवास कार्यालय से संबोधित कर रहे थे। अपर मुख्य सचिव सामान्य प्रशासन श्री विनोद कुमार, प्रमुख सचिव संस्कृति श्री शिव शेखर खान द्वारा जन-जन को +हर घर तिरंगा+ अभियान में जुड़ कर आनंद और उत्साह से आजादी का पर्व मनाएं।

मुख्यमंत्री श्री चौहान पंचायती राज संस्थाओं के नवनिर्वाचित प्रतिनिधियों को बीडियो कान्फेसिंग से निवास कार्यालय से संबोधित कर रहे थे। अपर मुख्य सचिव सामान्य प्रशासन श्री विनोद कुमार, प्रमुख सचिव संस्कृति श्री शिव शेखर खान द्वारा जन-जन को +हर घर तिरंगा+ अभियान में जुड़ कर आनंद और उत्साह से आजादी का पर्व मनाएं।

प्रधेस की सभी पंचायतों ने कार्यक्रम में वर्चुअली सहभागिता की। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि +हर घर तिरंगा+ अभियान देशासीओं में राष्ट्रीय ध्वज के बारे में जागरूकता उत्पन्न कर देश-भक्ति की भावना जागृत करने का अभियान है। पूरे देश में 11 से 17 अगस्त तक स्वतंत्रता

सप्ताह मनाया जाएगा। हम सब 13 से 15 अगस्त तक अपने घरों, कार्यालयों और व्यावसायिक स्थलों पर तिरंगा अवधारणा का प्रकटीकरण है। यह आवश्यक है कि हम राष्ट्रीय ध्वज स्वयं क्रय कर लगाएं। प्रदेश में महिलाओं के स्व-सहायता समूह और सहकारी समितियाँ राष्ट्रीय ध्वज निर्माण में लगी हैं। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने भारत सरकार द्वारा दिन के साथ रात में भी राष्ट्रीय ध्वज प्रदर्शन की अनुमति प्रदान करने के लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी का आभार माना।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि +हर घर तिरंगा+ अभियान में सभी की भागीदारी सुनिश्चित करने सम्पूर्ण प्रदेश में व्यापक स्तर पर वातावरण निर्माण की गतिविधियाँ जारी हैं। गांव और नगरों में तिरंगा रेलियों, प्रभात के दौरे और भजन मंडलियों द्वारा जन-जन को +हर घर तिरंगा+ अभियान में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाए। समाज के प्रतिविधित व्यक्तियों, धर्मगुरुओं, समाजसेवियों, समाजसेवी संगठनों, विद्यालयों, महाविद्यालयों, एनसीआई, एनएसएस, जन अभियान परिषद के कार्यकर्ताओं तथा खेल एवं अन्य गतिविधियों से सबवित संगठन देश प्रेम के इस कार्य में समर्पण और सक्रियता से भाग लें। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने मंडलों में मानव श्रेष्ठता द्वारा भारत का नवका और रायसेन में 75 वर्ष के अंक के आकार का मानव श्रेष्ठता बनाने के नवाचार की सराहना की। मुख्यमंत्री ने बुरहानपुर में सभी धर्मों के धर्मगुरुओं द्वारा एक साथ तिरंगा

फहराकर आकर्षक बीडियो तैयार करने की भी प्रसंसा की गई। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि +हर घर तिरंगा+ अभियान से वृक्ष-रोपण गतिविधियों को भी जोड़ा जाए। साथ ही महापुरुषों के स्मारकों की साफ-सफाई जैसी गतिविधियों को भी अभियान में समिलित कर उनका स्परण और उनके प्रति सम्मान प्रकट किया जाए।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने नवनिर्वाचित पंचायत प्रतिनिधियों को बताया कि वे स्वयं भागी व्यापक स्व-सहायता समूह की बहनों से तिरंगा लेने गए थे। उन्होंने पंचायत प्रतिनिधियों को भी अपने आसपास के स्व-सहायता समूह की बहनों से राष्ट्रीय ध्वज क्रय करने के लिए प्रेरित किया। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि मुझे विश्वास है कि प्रदेशवासी राष्ट्रीय प्रेम और राष्ट्र-भक्ति के महाअयोजनों को सफल बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ो। प्रदेश के हर घर और हर प्रतिष्ठान में 13 से 15 अगस्त तक तिरंगा

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने नवनिर्वाचित पंचायत प्रतिनिधियों



से चर्चा में समरस पंचायतों के गठन को प्रदेश की अभूतपूर्व उपलब्धि बताया। उन्होंने कहा कि प्रेम और सद्ग्राव से ही विकास की गौतम गाथा लिखी जा सकती है। पंचायत अपने क्षेत्र के प्रत्येक स्मारकों की साफ-सफाई के बाबत व्यक्ति को संबंधित योजनाओं से जोड़ा जाना चाहिए। आवश्यकता समूहों के बाबत व्यक्ति को संबंधित करने के लिए योजनाओं से जोड़ा जाना चाहिए।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में स्वच्छता, शौचालयों के सही उपयोग, कृपौषण से मुक्ति, औंगनवाड़ी और शालाओं के संचालन में जन-भागीदारी, बिजली की बचत, नशामुक्ति, बेटियों के सम्मान के लिए संचालित योजनाओं, लाडली लझी, मातृ वंदना योजना आदि में शत-प्रतिशत सेंचुरेशन सुनिश्चित किया जाए। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि भारत सरकार और राज्य सरकार का 300 से अधिक योजनाओं के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी पंचायत प्रतिनिधियों पर है। उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाएगा। निष्पक्ष हितग्राही चयन और गुणवत्तापूर्ण निर्माण कार्य हम सबकी जिम्मेदारी है। राज्य सरकार, जन-प्रतिनिधि, पंचायत प्रतिनिधियों और अधिकारी एक इकाई के रूप में परस्पर समर्वय से इस प्रकार कार्य करें, जिससे मध्यप्रदेश को एक आदर्श के रूप में पूरे देश के सम्मुख प्रस्तुत किया जा सके।

प्रमुख सचिव संस्कृति श्री शिवराज शुक्रवार ने जानकारी दी कि प्रदेश में सभी राशन डुकानों, आँगनवाड़ीयों, पंचायतों में राष्ट्रीय ध्वज उपलब्ध हैं। प्रदेश की महिला स्व-सहायता समूहों तथा सहकारी संस्थाओं द्वारा 75 लाख ध्वजों का निर्माण किया गया है। भारत सरकार की संस्थाओं से भी ध्वज प्राप्त हुए हैं। सभी जिलों में हर घर तिरंगा के लिए वातावरण निर्माण की गतिविधियाँ जारी हैं।

## NGT ने नगर निगम पर ठोका 100 करोड़ का जुर्माना, कचरे में आग लगने से हुई थी 7 लोगों की मौत

चौंगीदूर, अंगौल में तुष्टियाना की ताजपूर रोड पर एक कचरा डंप साइट में आग लगने से सात लोगों की मौत के मामले में नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने नगर निगम पर 100 करोड़ रुपये का जुर्माना लेकर है। नगर निगम को यह जुर्माना एक माह के भीतर जया करवाना पड़ेगा। आदेश में कहा गया है कि यह जुर्माना अपर नगर निगम अदा नहीं करता है तो इसे सरकार को भना पड़ेगा। अदम बात यह है कि एक महीने के भीतर यदि राशि की अदायगी नहीं की गई तो हर महीने नगर निगम को 5 लाख रुपये व्याज के तौर पर भरने होंगे।

आदेश कुमार गोयल की अध्यक्षता वाली पोर्ट ने यह आदेश जारी किया है। एनजीटी ने आदेश दिया कि नगर निगम, तुष्टियाना को एक महीने के भीतर अंतरिम मुआवजे के लिए 100 करोड़ रुपये जमा करने के लिए और एक निगमी समिति की रिपोर्ट के अनुसार उपचारात्मक उपायों के लिए 100 करोड़ रुपये जमा करने के लिए कहा गया है कि डंप साइट में आग लगने की वजह से सात लोगों की मौत को

देखते हुए, नगर निगम उनके परिजनों को मुआवजे का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी था। मुआवजे का आकार 57.5 लाख रुपये किया गया था। 50 वर्ष से अधिक आयु के प्रत्येक व्यक्ति के लिए 10 लाख रुपये और 20 से कम आयु के व्यक्तियों के लिए 7.5 लाख रुपये मुआवजा जाएगा। इससे पहले, आग की घटना के संबंध में एक बीडिया रिपोर्ट का स्तर-संज्ञान लेते हुए, एनजीटी ने निगमी समिति को मौत के कारण, विफलता के लिए जिम्मेदार व्यक्तियों और उपचारात्मक कारंवाई के संबंध में एक तथ्यात्मक स्थिति रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए कहा था। जिसमें उपाय ज्ञान रखा गया है कि एनजीटी के इस आदेश से नगर निगम के हाथ पाल फूल गए हैं। चूंकि नगर निगम लुष्टियाना पहले ही कर्ज में डूँगा हुआ है, निगम के कच्चे कर्मचारी नियमित होने की मांग कर रहे हैं। ऐसे में यह राशि बतौर जुर्माना जमा करवाना निगम के गले की कांस बन गया है।

इन्डैर, 3 अगस्त से 9 अगस्त 2022

## दि कार्मिक पोस्ट

4

# पर्यावरण बचाने के लिए अब तक 33 लाख पेड़ लगा चुके हैं राजस्थान के ये प्रोफेसर

श्रीगंगानगर पर्यावरण के विगड़ते संतुलन की वजह से दुनिया भर में ग्लोबल वार्मिंग और क्लाइमेट चेंज जैसी कई गंभीर समस्याएं खड़ी हो रही हैं। इन समस्याओं से निपटने और पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने के लिए कई सरकारें, संगठन और कई व्यक्ति अपने-अपने स्तर पर प्रयास कर रहे हैं। इसी तरह राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले के ग्रामसिंह ताल्लुल के रहने वाले प्रोफेसर श्याम सुंदर ज्याणी ने साल 2003 से राजस्थान जैसे मरस्थल वाले इलाके में 'परिवारिक वानिकी' कॉन्सेप्ट के जरिए पौधरोपण करने की मुहिम छेड़ रखी है। वो 19 साल से पर्यावरण को बचाने के लिए पौधरोपण का काम कर रहे हैं।

राजस्थान जैसे रेगिस्तानी इलाके में जहां पानी की गंभीर समस्या है उस क्षेत्र में पौधरोपण करना और इन पेड़ों को पूरी तरह से विकसित कर वृक्ष में बदल देना एक बहुत बड़ी चुनौती है। लेकिन जब पेड़ को आपके परिवार का सदस्य ही मान लिया जाए फिर तो आपको उसे बचाने के लिए हर संभव प्रयास करने का जरूरत है। बोकानेर के कॉलेज में समाजशास्त्र के प्रोफेसर श्याम सुंदर ज्याणी ने नृछ इसी तरह कई लोगों को पेड़ लगाने के लिए प्रेरित किया। विना किसी सरकारी मदद



के अपने स्तर पर पर्यावरण संतुलन को बनाए रखने के लिए ये काम शुरू किया। जिसके लिए उन्हें ग्राम्पति पुरस्कार भी मिल चुका है। प्रोफेसर ज्याणी बताते हैं, मैंने साल 2003 में इसकी शुरुआत की थी। जिसमें कॉलेज में ही पौधरोपण का काम किया। लेकिन मुझे लगा कि हमें आस-पास के इलाके में भी करना चाहिए। इस सिस्टमसिले में आस-पास के गांवों में जाकर पर्यावरण को लेकर लोगों की जागरूकता के बारे में जाना। इसके बाद हमने पौधरोपण की शुरुआत की। वो कहते हैं कि पौधरोपण एक इंटेर्न नहीं है, यह एक पूरा प्रोसेस है जिसमें पौधे लगाने से लेकर उसके बड़े हो जाने तक उसकी देखभाल करनी होती है। राजस्थान के रेगिस्तान वाले इलाके में पौधरोपण करना या इसके विषय में कल्पना करना भी एक बहुत बड़ी चुनौती है। वो कहते हैं, परिवार उनके इस मुहिम में शामिल हो गए हैं।

घातक बीमारियों को फैलाने वाले आक्रामक मच्छरों की निगरानी के लिए लॉन्च हुआ डैशबोर्ड

नई दिल्ली। दुनिया भर में हर साल मच्छर लगभग 70 करोड़ संक्रमण और 10 लाख से अधिक मौतें के लिए जिम्मेदार हैं, जिससे मच्छर पृथ्वी पर सबसे घातक जीव बन जाते हैं। क्योंकि मच्छरों की प्रजातियों का केवल एक छोटा सा हिस्सा ही बीमारियों का संचार करता है, इसलिए सामुदायिक सुरक्षा में व्यापक निगरानी और सटीक पहचान महत्वपूर्ण है।

उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए अब दुनिया भर में मच्छर जिन बीमारियों से हो रहे खतरे से निपटने के लिए, दक्षिण फ्लोरिडा विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने लोगों द्वारा संचालित एक मच्छरों की निगरानी करने वाले डैशबोर्ड लॉन्च किया है। ग्लोबल मॉस्टिटो ऑन्जर्वेशन डैशबोर्ड स्वतः: मच्छर की पहचान करने के साथ इससे होने वाली बीमारियों की वैश्विक निगरानी करने की बड़े परियोजना का हिस्सा है। डैशबोर्ड तीन तरह के ऐप के आंकड़ों को जोड़ता है, मॉस्टिटो अलर्ट, नासा का ग्लोबल ऑन्जर्वर और आईन्चुरुलिस्ट। प्रत्येक ऐप लोगों के द्वारा भेजे गए तस्वीरों का उपयोग करता है, जहां दुनिया भर के रोजमर्यादा लोग अपने स्मार्टफोन का उपयोग करके मच्छर मच्छरों की तस्वीरें भेजते हैं। अंतर्राष्ट्रीय आकड़ों के साथ, कंप्यूटर ब्राउजर या मोबाइल डिवाइस के माध्यम से सुलभ डैशबोर्ड में आवृत्ति और भौगोलिक रिजॉल्यूशन पर आंकड़े प्रदान करने की क्षमता होती है, अन्यथा यह काम लागत और अन्य बाधाओं के कारण असंभव होता है। जीव विज्ञान के सदायक प्रोफेसर तथा प्रमुख अध्ययनकर्ता रखन कार्यों ने कहा यह डैशबोर्ड मच्छरों की निगरानी और नियन्त्रण के लिए दुनिया भर के लोगों को एक साथ जोड़ता है। यह उपकरण मच्छर नियन्त्रण कर्मियों को आक्रामक जागीरों को खोजने और उन्हें नष्ट करने में मदद करेगा। उन्होंने कहा यह डैशबोर्ड क्षेत्र के आधार पर कंप्यूटरों के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मच्छर जिन बीमारियों की निगरानी करेगा। टीकों और इलाज की सामान्य कमी को देखते हुए, दुनिया भर में मच्छरों की निगरानी और आवास शर्मन को बढ़ाने और निरंतर बनाए रखने की आवश्यकता है। इस डैशबोर्ड पर उपलब्ध रीवर-टाइम डेटा शोधकर्ताओं, मच्छर नियन्त्रण कर्मियों और नीति निर्माताओं को मच्छर जिन बीमारियों का जल्द पता लगाने में मदद करेगा। मच्छरों की निगरानी के लिए लोगों की मदद या नागरिक विज्ञान की प्रभावशीलता का परीक्षण करने के लिए, कार्यों और तीन यूएसएफ छात्रों की एक टीम ने नागरिक वैज्ञानिकों से जीका, पीला बुखार, डेंगू और चिकनगुनिया पर गैर करने के लिए कहा। नागरिक वैज्ञानिक न केवल रोग फैलाने वालों का पता लगाने में सफल हुए, बल्कि उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप अमेरिका में एडीज स्कैपुलरिस के पहले आईन्चुरुलिस्ट द्वारा अवलोकन की गई, एक ऐसी आक्रामक प्रजाति जो पीले बुखार के लिए जिम्मेदार है।

# देहरादून में मिला पेड़ों को शहीद का दर्जा, पर्यावरण प्रेमियों ने फूलमाला घढ़ाकर दी श्रद्धांजलि....

देहरादून, उत्तराखण्ड की राजधानी देहरादून के सहकारी बोर्ड के चौकीकरण का कान ढंग रहा है, जिसमें लगानी 2200 पेड़ों को काटा जा रहा है। ऐसे नें पर्यावरण प्रेमी और स्थानीय लोग इस योजना के खिलाफ आंदोलन कर रहे हैं। इन्हीं लोगों ने काटे गए पेड़ों को शहीद का दर्जा दिया और उन्हें श्रद्धांजलि देकर मौर रखा। बच्चों से लेकर बड़े तो भी देहरादून घाटी की धोरणे में कल्पना करना भी एक बहुत बड़ी चुनौती है। वो कहते हैं, अब कई शिक्षक संगठनों के लोग और लाखों परिवार उनके इस मुहिम में शामिल हो गए हैं।

देहरादून निवासी और समाजसेवी आशीष गर्ग ने इस योजना के खिलाफ आंदोलन कर रहे हैं। आशीष गर्ग ने बताया कि जिस तरह हमारे देश के सैनिक सरहदों पर दुर्घटनाएं से हमें बचाते हैं और हमारी रक्षा के लिए शहीद होते हैं, शहीद होने पर हम उन्हें श्रद्धांजलि देते हैं, ठीक उसी तरह वृक्ष देश के अंदर 24 घंटे अंक्रीजन देकर प्रदूषण से बचाकर ग्रीनहाउस गैस को कम करके पानी संचयित कर पश्चियों और दूसरे कीट परांगों को आश्रय देकर मानव को निस्वास देते हैं, तो केविन दुर्भावकरण मानव अपने लाभ के चलते इनके बारे में जरा भी नहीं सोचता है। उन्होंने कहा कि शहीद होने वाले इन पेड़ों को पूरी श्रद्धा के साथ श्रद्धांजलि दी गई है। 'मेड बाय बीटीडी' और 'सिटीजन फॉर ग्रीन ट्रू' जैसे समाजसेवी संगठनों के साथ-साथ स्थानीय लोगों का भी इन

पेड़ों से खास लगाव है। देहरादून निवासी नितेश राठी ने कहा कि केंद्र सरकार की नेशनल अंडर ट्रांसपोर्ट पॉलिसी और स्मार्ट सिटी के तहत गाइडलाइन को फॉलो करते हुए, यह काम नहीं किया जा रहा है। वहीं सिटीजन ट्रैफिक जाम को कम करने का मतलब करत्ही है कि पेड़ों को शहीद किया जाए, पर्यावरण प्रेमी हीरा चौहान ने कहा कि पेड़ न सिर्फ हमारे पर्यावरण को बचाते हैं बल्कि पर्यावरण में रहने वाले पश्चियों का भी आशीर्वाद होते हैं, जिसे हम उजाड़े का काम कर रहे हैं। वहीं सिटीजन फॉर ग्रीन ट्रून के सचिव हिमांशु अरोड़ा का कहना है कि देहरादून घाटी अपनी हरियाली और अपने पौसम के लिए मशहूर है, लेकिन जब इसे हरा और ठंडा बनाने वाले पेड़ ही नहीं रहेंगे तो पर्यटक भी देहरादून में नहीं आएंगे। जहां एक तरफ स्थानीय जनता और पर्यावरण प्रेमी इन पेड़ों को बचाने के लिए आंदोलन कर रहे हैं, तो वहीं दूसरी तरफ वन विभाग और लोक निर्माण विभाग ने शपथ पत्र दखिल कर कहा है कि 1700 को पेड़ों का कटान चौड़ाकरण के लिए जरूरी है। बाकी अन्य पेड़ों को दूसरी जगह शिष्ट किया जाएगा।

